कृति	:	मेरे आशीष लेते जाओ
कृतिकार	:	मुनि प्रज्ञा सागर
प्रकाशक	:	जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद
प्राप्ति स्थल	:	श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर भूयंग देव चौराहा, सोला रोड़, अहमदाबाद, श्रावक संघ 14, महादेव नगर सोसायटी, सरदार पटेल सोसायटी के पीछे भरूच– 392002
मूल्य	:	15/– रूपये मात्र

–सन्त आशीर्वाद देते हैं।

–देना भारतीय संस्कृति की प्रमुख पहचान है इसलिए तो यहां कहा गया है जो देता है वह देवता है, जोर ख्ता है वह राक्षस। रखो !

–रखना बुरा नहीं है, लेकिन रखने के साथ, देना भी सीखो। जोड़ने के साथ, छोड़ना भी सीखो। अर्जन के साथ, विसर्जन भी सीखो। बटोरने के साथ, बांटना भी सीखो।

–इतना भी मत बांटो कि किराये के मकान में रहना पड़े यानि दुसरों के आश्रित होकर रहना पड़े।

–बांटना सीखना है तो जैन मुनि के कमण्डल से सीखो। कैसे ?

–कमण्डलु में दो मुंह होते हैं। एक से पानी भरा जाता है और दूसरे से पानी बाहर निकाला जाता है। जिससे पानी भरा जाता है वह मुंह बड़ा होता है, जिससे पानी निकाला जाता है वह मुंह टोंटी छोटा होता है। इसी तरह हम अर्जन तो बड़ो मुंह से करें लेकिन विसर्जन भी करते रहें, ताकि धन की शुद्धि होती रहे।

–आचार्य जिनसेन स्वामी ने महापुराण ग्रन्थ में श्रावकों का संविधान बनाते हुए कहा है– श्रावकों को अपनी आय का छटवां भाग परमार्थ हेतु निकालना चाहिए–

–वेद कहता है– हे मनुष्य! तू सौ हाथ वाला होकर धनार्जन कर और हजार हाथ वाला बनकर दान कर। इस प्रकार निज की उन्नति कर, क्योंकि तू जितना देगा, उससे कई गुना होकर लौटेगा।

–तुम देना सीखो क्योंकि जो अंजलि भर लेकर दरिया भर लौटा देता है वह संत होता है।

संत देते है, प्रतिपल देते हैं, देते ही चले जाते हैं।

–आशीर्वाद के अतिरिक्त उनके पास देने के लिए कुछ भी नहीं। आशीर्वाद ही देते हैं। उनका होना ही आशीर्वाद है। आशीर्वाद उनकी रोशनी हें आशीर्वाद उनकी सुगन्ध है और आशीर्वाद ही उनका प्रेम है। संत जब आशीर्वाद दे देते हैं तो वह पूरा होता है, होना भी चाहिए। क्योंकि संत अपने मन से तो कुछ कहते नहीं, परमात्मा जो उनसे कहला देता है, वही वे।

कहते हैं। संत तो बांसुरी की तरह होते हैं। उनमें परमात्मा जो भी स्वर फूंक देता है, वही वे तुम्हें सुना देते हैं..............

––––––..